



भाभी की चुदाई के चक्कर में चचेरी बहन को पकड़ लिया-2

“गांव वाले चाचा की बेटी को भाभी के सहयोग से मैंने रात में पकड़ लिया, एकदम उसके होंठों पर होंठ रख दिए, उसके मुख में जीभ घुसा दी। आगे क्या हुआ ? ...”

Story By: mahesh kumar (maheshkumar_chutpharr)

Posted: Sunday, March 26th, 2017

Categories: [भाई बहन](#)

Online version: [भाभी की चुदाई के चक्कर में चचेरी बहन को पकड़ लिया-2](#)

भाभी की चुदाई के चक्कर में चचेरी बहन को पकड़ लिया-2

मेरी चचेरी बहन तो चली गई पर मेरे अन्दर अन्तर्वासना का तूफान उमड़ रहा था, रात में मैंने दो बार हस्तमैथुन किया तब जाकर मैं सो पाया।

अगले दिन सुबह मैं बिना नाश्ता किये जल्दी ही स्कूल चला गया इसलिये घर में मेरी किसी से भी बात नहीं हुई मगर दोपहर को जब मैं स्कूल से आया तो मेरे दिल में हल्का सा डर था, कहीं सुमन ने रात वाली बात किसी को बता ना दी हो ?

मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ, सब कुछ सामान्य ही रहा और सुमन का व्यवहार तो ऐसा था जैसे कल रात के बारे में उसे कुछ पता ही नहीं।

इसी तरह तीन दिन गुजर गये जो बिल्कुल सामान्य ही रहे मगर पता नहीं क्यों सुमन के प्रति मेरी सोच को क्या होता जा रहा था, अब वो मुझे बहुत खूबसूरत लगने लगी थी। सुमन को गाँव से आये हुए अभी एक हफ्ता ही हुआ था और हफ्ते भर में ही सुमन का रंग रूप काफी निखर गया था, ऊपर से वो मेरी भाभी के सलवार सूट पहनती थी जो उस पर इतने खिलते थे उनको देखकर कोई कह ही नहीं सकता कि यह गाँव की वही सामान्य सी दिखने वाली लड़की है।

बिल्कुल गोल चेहरा, बड़ी बड़ी भूरी आँखें, पतले और सुर्ख गुलाबी होंठ, लम्बी सुराहीदार गर्दन, हाँ उनका वक्षस्थल मेरी भाभी के मुकाबले में कुछ छोटा था मगर उसमें काफी कटाव व कसाव था, लम्बा कद, बिल्कुल पतली सी कमर और उसके नीचे भरे हुए माँसल गुदाज नितम्ब व जाँघें !

उस समय भी सुमन के शरीर का कटाव किसी फिल्मी अभिनेत्री से कम नहीं था बस कुछ समय की ही दरकार थी। अभी तक मैंने सुमन को कभी ऐसे नहीं देखा था। सुमन सही में इतनी खूबसूरत हो गई थी, या फिर पता नहीं उस रात के बाद मुझे ही ऐसा लगने लगा था।

सुमन के परिवार और हमारे परिवार के बीच काफी करीबी सम्बन्ध थे, उसके पापा को मैं चाचा ही मानता था मगर फिर भी पता नहीं क्यों मैं सुमन के प्रति आसक्त सा होता जा रहा था और दिल ही दिल में उसको हासिल करने कल्पना करने लगा था।

मैंने अपने आप को समझाने की काफी कोशिश भी की मगर जब मुझसे रहा नहीं गया तो आखिरकार मैंने सुमन को पाने के लिये एक योजना बना ली और इसके लिये सबसे पहले तो मैंने अपनी भाभी को सारी बात बता दी।

मेरी बात सुन कर पहले तो भाभी गुस्सा हुई मगर फिर मान गई और मेरा साथ देने के लिये भी तैयार हो गई।

करीब दो दिन बाद ही मुझे मौका मिल गया, उस दिन हल्की सी बारिश होने के कारण मौसम थोड़ा सा खराब था इसलिये शाम को मौका देखकर मैंने शार्ट-सर्किट का बहाना करके जान बूझ कर हमारे घर की बिजली खराब कर दी जिससे हमारे पूरे घर में अन्धेरा हो गया।

मैं उस दिन की तरह ही अन्धेरे का फायदा उठाना चाहता था और इसके लिये मैंने अपनी योजना पहले ही भाभी को बता दी थी।

बिजली ना होने के कारण रात को सभी ने जल्दी खाना खा लिया और सोने की तैयारी करने लगे। मेरे मम्मी पापा तो खाना खाते ही अपने कमरे में जाकर सो गये और मैं ड्राईगरूम में आ गया।

अब बर्तन साफ करना और बचे हुए काम मेरी भाभी व सुमन को करने थे। मेरी योजना के अनुसार भाभी ने पहले ही तबियत खराब होने का बहाना बना लिया और बचे हुए काम सुमन को खत्म करने के लिये बोल कर अपने कमरे में जाकर सो गई।

सुमन ने करीब आधे घण्टे में ही सारे काम निपटा लिये और अब बस उसे घर का मुख्य दरवाजा बन्द करने के लिये आना था, मगर सुमन शायद दरवाजा बन्द करने के लिये आना नहीं चाहती थी क्योंकि काम खत्म होने के बाद भी काफी देर तक वो रसोईघर में ही खड़ी रही, वो असमन्जस में थी कि दरवाजा बन्द करने के लिये जाये या ना जाये!

इसके लिये वो अब भाभी को बता भी नहीं सकती थी, आखिर वो करे तो क्या करे ?

कुछ देर तक तो सुमन ऐसे ही रसोईघर में खड़ी रही और फिर दरवाजा बन्द करने की बजाय सीधा भाभी के कमरे में चली गई, शायद आज वो दरवाजा बन्द करना ही नहीं चाहती थी, इससे तो मेरी सारी योजना विफल होने वाली थी, मगर फिर भगवान ने मेरी सुन ली क्योंकि कुछ देर बाद ही मोमबत्ती जलाये हुए कोई ड्राईगरूम की तरफ आने लगा।

मैं समझ गया कि यह सुमन ही है, वो मोमबत्ती जलाकर इसलिए आ रही है ताकी मोमबत्ती की रोशनी में मैं उसे पहचान लूँ और उस दिन की तरह कोई हरकत ना करूँ मगर आज तो यह सारी योजना मेरी ही बनाई हुई थी।

मैं तुरन्त ड्राईगरूम के दरवाजे के साथ चिपक गया और जैसे ही सुमन ने दरवाजे में पैर रखा सबसे पहले मैंने मोमबत्ती को ही झपटा मारकर नीचे गिरा दिया।

मोमबत्ती नीचे गीरते ही बुझ गई और बिल्कुल अन्धेरा हो गया।

अचानक हमले से सुमन घबरा गई और तुरन्त वापस मुड़ने लगी मगर मैंने उन्हें पकड़ कर ड्राईगरूम के अन्दर खींच लिया और वो कुछ बोले उससे पहले ही उनके होंठों को अपने मुँह में भरकर बन्द कर दिया। अब सुमन के दोनों होंठ मेरे मुँह में थे इसलिये वो कुछ बोल

तो नहीं सकती थी मगर कसमसाते हुए पीछे की तरफ हटने लगी।

मैंने भी उसे छोड़ा नहीं और उसके साथ साथ पीछे होता रहा मगर वो ज्यादा पीछे नहीं जा सकी क्योंकि थोड़ा सा पीछे होते ही दीवार आ गई इसलिये अब वो अपने दोनों हाथों से मुझे धकेलने लगी मगर आज मैं कहाँ मानने वाला था, मैंने उसे दीवार से सटा लिया और जोरो से उसके होंठों को चूसता रहा।

सुमन के होंठों को चूसते हुए ही मैंने अपना एक हाथ उसके शर्ट के अन्दर डाल दिया, नीचे उसने ब्रा पहन रखी थी इसलिये मैंने ब्रा के ऊपर से ही उसकी चूचियों पर अपना हाथ रख दिया।

सुमन के उरोजों को मैं चूचियाँ इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि वो काफी छोटी थी और मेरी भाभी के उरोजों के मुकाबले में तो वो चूचियाँ ही थी।

मैंने बस एक बार उन्हें हल्का सा सहलाकर ब्रा के किनारे को पकड़ लिया और आहिस्ता आहिस्ता उसको ऊपर खींचते हुए उसकी दोनों चूचियों को शर्ट के अन्दर ही ब्रा की कैद से आजाद कर लिया।

अब उसकी दोनों नंगी चूचियाँ मेरी मुट्ठी में थी जिनको मैं धीरे धीरे सहलाने लगा।

सुमन की चूचियाँ मेरी भाभी से छोटी थी मगर भाभी के मुकाबले में काफी सख्त और मुलायम थी, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि मेरे हाथ में खड़की की कोई गेंद आ गई हो।

मैं ऐसे ही सुमन की दोनों चूचियों को मसलता रहा और ऊपर उनके होंठों को चूसते हुए अपनी ज़ुबान को भी उनके होंठों के दरम्यान में धकेलने की कोशिश करने लगा, मगर उसने दाँतों को बन्द कर रखा था जिसके कारण मेरी जीभ अन्दर नहीं जा सकती थी इसलिये मैं उनके होंठों को ही अन्दर से चाटने लगा, फिर कुछ देर बाद ही आहिस्ता आहिस्ता सुमन के दाँत अपने आप थोड़ा सा अलग हुए जिससे मेरी ज़ुबान को अन्दर जाने की इजाज़त

मिल गई और अगले ही पल मेरी जुबान सुमन की जुबान से टकराने लगी !

कुछ देर तक मैं ऐसे ही सुमन के होंठों व जुबान के रस को चूसता रहा और एक हाथ से उसकी दोनों चूचियों को भी गूँथता रहा जिससे जल्द ही उसकी चूचियों के छोटे छोटे दोनों निप्पल कटोर हो गये और साँसें गर्म व गहरी होने लगी ।

सुमन के होंठों का जी भर कर रसपान करने के बाद मैंने होंठों को छोड़ दिया और उसकी गर्दन पर से चूमते हुए धीरे से नीचे उसकी चूचियों पर आ गया । सुमन के होंठ अब आजाद थे मगर फिर भी डर के कारण वो कुछ बोल नहीं रही थी बस उसके मुँह से गहरी गहरी साँसें फूट रही थीं और कसमसाये जा रही थी ।

वो आज भी यही सोच रही थी की मैं उसे पायल भाभी समझ कर ये सब कर रहा हूँ ।

तब तक मैंने सुमन के शर्ट के निचले सिरे को पकड़ कर ऊपर की तरफ खींच लिया, शर्ट ढीला ही था इसलिये वो आसानी से चूचियों के ऊपर तक उठता चला गया और अब उनकी दोनों चूचियाँ निर्वस्त्र थी जिन पर मेरी गर्म साँसें पर पड़ रही थी । सुमन भी लम्बी लम्बी साँसें ले रही थी जिससे उनकी दोनों चूचियाँ जोरो से उपर नीचे हो रही थी, यहाँ तक की उनके दिल की धड़कन तक मुझे सुनाई दे रही थी ।

और जैसे ही मैंने अपने होंठों के हल्के स्पर्श से चूची को छुआ... उम्ह... अहह... हय... याह... सुमन के जिस्म में एक तनाव सा पैदा हो गया और उसके जिस्म ने एक झुरझुरी सी ली मगर मैं रुका नहीं और अपने होंठों से उसकी छोटी छोटी चूचियों को एक बार प्यार से चूम लिया जिससे सुमन के पूरे बदन में झनझनाहट सी दौड़ गई जिसको मैंने स्पष्ट महसूस किया ।

मैंने सुमन की चूचियों को बस एक बार चूमा और फिर अपने होंठों को उनके निप्पलों के

पास ले आया और आहिस्ता से अपनी ज़ुबान को बाहर निकाल कर उसके एक निप्पल को अपनी ज़ुबान से सहलाने लगा ।

जैसे जैसे मेरी ज़ुबान उसके नर्म निप्पल को सहला रही थी, वैसे वैसे सुमन के जिस्म में बेचैनी बढ़ने लगी । सुमन एक कुँवारी लड़की थी जिसके लिए यह सब कुछ पहली बार हो रहा था ।

अपने जिस्म के साथ हो रही इस छेड़-छाड़ को वो बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी मगर डर और शर्म के कारण वो कुछ बोल भी नहीं पा रही थी ।

मैंने आहिस्ता से उसके एक निप्पल को अपने होंठों के बीच ले लिया और उसे हौले हौले से चूसने लगा जिससे उसकी चिकनाहट मेरे मुँह में घुलने लगी । मैं चूसते हुए उनके निप्पलों को अपनी ज़ुबान से सहला भी रहा था, वो पहले ही काफी कठोर हो गये थे मगर अब तो वो तन कर पत्थर हो गये ।

सुमन मेरा विरोध तो नहीं कर रही थी मगर वो बड़ी जोर से कसमसाते हुए बस मेरी हरकतों से बचने का प्रयास कर रही थी जिसका मुझ पर कोई असर नहीं हो रहा था ।

मैं जिस हाथ से सुमन दीदी की चूचियों को सहला रहा था उसे अब सुमन के नंगे पेट पर ले आया था जहाँ पर उन्होंने सलवार बाँध रखी थी । वैसे तो मैं सुमन की सलवार में हाथ डालना चाहता था मगर सलवार का नाड़ा काफी सख्त बाँधा हुआ था जिस कारण मेरा हाथ अन्दर नहीं गया, इसलिये मैं धीरे धीरे उनके पेट को ही सहलाने लगा ।

सुमन की साँसें बड़ी जोर से चल रही थी जिससे उनका पेट फैल और सिकुड़ रहा था । यह हिंदी सेक्स स्टोरी आप अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

कुछ देर तक मैं ऐसे ही उनके मखमली पेट व नाभि को सहलाता रहा और अबकी बार

सुमन के साँस लेने पर जैसे ही उनका पेट थोड़ा सा सिकुड़ा... मैंने धीरे से अपने हाथ की उंगलियाँ सलवार के अन्दर घुसा दी जो उसकी पेंटी से टकराई।

सुमन मेरे हाथ को पकड़ना चाहती थी मगर जब तब तक वो मेरे हाथ को पकड़ती तब तक मेरा पूरा हाथ उनकी सलवार व पेंटी में उतर गया।

और जैसे जैसे मेरा हाथ उनकी पेंटी में उतरता गया, वैसे वैसे ही सुमन का बदन में कंपकपी सी चढ़ती गई, उसने अपने दोनों हाथों से मेरा हाथ पकड़ लिया और अपनी दोनों जाँघों को भी भींचकर बन्द कर लिया। शायद सुमन का यह पहला अवसर था कि उसकी बुर को कोई छू रहा था इसलिये उसका इस तरह से डरना और शर्माना लाजमी ही था।

मेरा हाथ अब सुमन की पेंटी में दोनों जाँघों के बीच उसकी बुर पर था जिस पर बिल्कुल छोटे छोटे और नर्म मुलायम बाल महसूस हो रहे थे, शायद सुमन ने उन्हें हफ्ते भर पहले ही साफ किया होगा, तभी मुझे पेंटी में हल्की सी नमी भी महसूस हुई और इसका मतलब था कि मेरी हरकत से सुमन को भी मजा आ रहा था।

अब तो मेरा हौसला और अधिक बढ़ गया, मेरा हाथ सुमन की दोनों जाँघों के बीच फंसा हुआ था जिसे मैं हिला तो नहीं सकता था मगर मैंने अन्दर ही अन्दर धीरे धीरे अपनी उंगलियों से उनकी बुर को मसलना शुरू कर दिया जिससे सुमन अपनी जाँघों को एक दूसरी के साथ रगड़ कर अपनी बुर को मेरी उंगलियों से बचाने का प्रयास करने लगी और साथ ही मेरे हाथ को भी अपनी सलवार से बाहर खींचने लगी।

मगर मैं कहाँ रुकने वाला था, मैं अन्दर ही अन्दर उसकी बुर को मसलता रहा जिससे अपने आप ही धीरे धीरे सुमन की जाँघें खुलने लगी और मेरा हाथ स्वतन्त्र हो गया, अब मैं पूरे हाथ को फैला कर धीरे धीरे उसकी बुर को सहलाते हुए उसकी रूपरेखा का मुआयना कर रहा था।

सुमन की बुर बिल्कुल छोटी सी थी मगर काफी फूली हुई लग रही थी, ऐसा महसूस हो

रहा था जैसे मिट्टी के एक बड़ी सी ढेरी के बीचोंबीच उंगली से एक छोटी सी रेखा खींच रखी हो।

मैंने धीरे से अपने अँगूठे व बीच वाली उंगली से बुर की कोमल फाँकों को थोड़ा सा फैलाया और आहिस्ता से एक उंगली को बुर की दरार के बीच में रख दिया जिससे सुमन का पूरा बदन झनझना गया और उसके मुँह से बहुत ही धीमी एक आह निकल गई।

धीरे धीरे मैंने बुर की दरार को सहलाना शुरू कर दिया जिससे सुमन के मुँह से धीमी धीमी सिसकारियाँ सी निकलने लगी और दोनों जाँघों के बीच का दायरा भी बढ़ने लगा। मेरी उंगली बुर की दोनों फाँकों के बीच बुर के उपरी भाग से लेकर नीचे बुरद्वार तक चल रही थी और ऐसे करते हुए जब भी मेरी उंगली उसकी बुर के अनारदाने को छूती तो सुमन का पूरा बदन ऐसे झटका सा खाता जैसे उन्हें कोई करेंट लगा हो, और ना चाहते हुए भी उसके मुँह से दबी जुबान में एक हल्की सी कराह फूट पड़ती।

कुछ देर तक मैं ऐसे ही सुमन की बुर के साथ खेलता रहा जिससे जल्द ही मेरी उंगलियाँ बुर रस से भीग गई। सुमन अब भी कसमसाये जा रही थी मगर अब वो मेरे हाथ को हटाने का प्रयास नहीं कर रही थी क्योंकि उसे भी अब मजा आ रहा था और वो काफी उत्तेजित हो गई थी।

मुझे तो लग रहा था कि कुछ ही देर में वो अपनी जिंदगी में पहली बार बुर रस छोड़ने के मुकाम तक पहुँच जाने वाली थी। मैं भी यही चाह रहा था कि ऐसे ही उसकी बुर का पहला पानी निकाल दूँ जिससे उसे भी इस खेल का थोड़ा बहुत स्वाद तो मिल सके!

मैंने अपने हाथ के साथ साथ उसके निप्पलों पर अपने होंठों का दबाव भी बढ़ा दिया, बल्कि अब मैं उसके निप्पलों को अपने दांतों से हौले हौले काटने भी लगा था जिससे तेज-तेज सांसों के साथ सुमन के मुँह से हल्की हल्की सिसकारियाँ भी निकलने लगी... वो अपनी सिसकारियो को रोकना चाह रही थी मगर फिर भी वो मुझे सुनाई दे रही थी।

चंद लम्हों के बाद ही सुमन के जिस्म ने जैसे ज़ोरदार झटका सा खाया और उसके बदन का तापमान अचानक से बढ़ गया, सुमन का पूरा जिस्म अकड़ गया और उसकी बुर मेरे हाथ पर ही रह रह कर पानी उगलने लगी।

मैं समझ गया कि सुमन की बुर पहली पहली बार पानी छोड़ रही है इसलिये मैंने उसकी बुर को अपने हाथ से जोर से दबा लिया और उसके जिस्म को अपने जिस्म के साथ भींच लिया।

थोड़ी ही देर में सुमन की बुर ने अपना सारा रस मेरे हाथ पर ही उगल दिया जिससे मेरा पूरा हाथ और सुमन की पेंटी यहाँ तक कि सलवार भी गीली हो गई, सुमन का जिस्म अब मेरी बांहों की गिरफ्त में बिल्कुल ढीला हो गया था।

सुमन अब निढाल हो गई थी मगर मेरा हाथ अभी तक उसकी पेंटी में बुर पर ही था जो अभी तक धीरे धीरे उसकी बुर को सहला रहा था, बुर रस से मेरा पूरा हाथ लिस गया था इसलिये अब वो और भी आसानी से बुर पर फिसल रहा था।

मैंने धीरे से सुमन के गर्दन को अपनी तरफ घुमाकर उसके होंठों को चूम लिया, तभी सुमन जैसे अभी अभी नीन्द से जगी हो, उसने चेहरे को घुमाकर अपने होंठों को मेरे होंठों से अलग कर लिया मगर मैं ऐसे कहाँ छोड़ने वाला था मैंने उसकी गर्दन को पकड़कर फिर से उनके होंठों को मुँह में ले लिया और अपनी जीभ उसके होंठों के बीच घुसा दी जिससे वो कसमसाने लगी और मुझसे छुटाने का प्रयास करने लगी मगर मैंने उसे वैसे ही पकड़े रखा और उसके होंठों को चूसता रहा, साथ ही उसकी बुर को भी धीरे धीरे मसलता रहा।

कहानी जारी रहेगी।

chutpharr@gmail.com

Other stories you may be interested in

यार से मिलन की चाह में तीन लंड खा लिए-6

पिछली कहानी में मैंने भोला सिंह को बताया कि कैसे मामा के भतीजे की शादी में पहली बार मुझे चार लंडों का मजा मिला. कई दिन तक मेरी चूत दुखती रही. फिर मैंने उनको वह कहानी बताई जब मेरे जीजा [...]

[Full Story >>>](#)

भाई बहनों की चुदक्कड़ टोली-4

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मेरी बड़ी दीदी हेतल ने मेरी छोटी बहन मानसी के सामने मेरी जवानी करतूतों की सारी पोथी खोल कर रख दी थी. मगर मुझे अब किसी बात का डर नहीं था क्योंकि [...]

[Full Story >>>](#)

भाई बहनों की चुदक्कड़ टोली-3

कहानी के दूसरे भाग में आपने पढ़ा कि मेरी बहन मानसी अपनी चूत में डिलडो लेकर मजा ले रही थी. मैं चुपके से उसके कमरे में पहुंच गया और मैंने अपनी बहन की चूत चोद दी. फिर एक दिन हेतल [...]

[Full Story >>>](#)

भाभी की कुंवारी बहन की सीलतोड़ चुदाई

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा प्रणाम, मेरा नाम पंकज सिंह है. मैं पिछले 3 साल से दिल्ली में पढ़ाई कर रहा हूँ. मेरी उम्र अभी 24 साल है. मेरा कद 5 फुट 9 इंच है. मैं गोरे रंग का [...]

[Full Story >>>](#)

चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-2

मेरी सेक्स कहानी के प्रथम भाग चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-1 में आपने पढ़ा कि कॉलेज में जाते ही मेरा दिल धड़कने लगा था किसी जवान मर्द के लिए, मेरी प्यासी जवानी मेरे सर चढ़ कर बोल रही थी. [...]

[Full Story >>>](#)

